'श्री' रूपी फल रहे जीवन में सदा स्थापित

डाकोरजी की तपोस्थली, तीर्थ भूमि पर सम्पन्न हुए 'श्रीविद्या सायुज्य जगद्गुरु श्रीकृष्ण तत्व गुरु पूर्णिमा महोत्सव' में सद्गुरुदेव का ओजस्वी प्रवचन -

गुरु पूर्णिमा का महोत्सव, आषाढ़ मास की पूर्णिमा, इन्द्र और वरूण अपने पूर्ण पराक्रम के साथ धरती के प्राणियों वन, जंगल, नदियों को तृप्त करते हुए और ऐसे आनन्द पूर्ण माहौल में गुरु और शिष्य का मिलन।

पूर्ण शिष्य, पूर्ण गुरु और पूर्णिमा की तिथि। दिव्य श्लोक है -

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात पूर्ण मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते।।

आप सभी को बहुत-बहुत बधाई, आशीर्वाद। बहुत शिष्य यहां आये है और हजारों लाखों शिष्य अपने-अपने स्थानों पर गुरु पूर्णिमा सम्पन्न कर रहे है। उन सभी को मेरा बहुत-बहुत स्नेह, आशीर्वाद।

यही तो शिष्य के जीवन में वर्ष का सबसे बड़ा पर्व होता है - गुरु पूर्णिमा।

प्रेम से भरे गुरु और प्रेम से भरे शिष्य का मिलन होता है।

कोई कहता है कि गुरु विशेष आशीर्वाद देते है। अरे भाई! गुरु का तो हर आशीर्वाद विशेष ही होता है।

गुरु वही है जो सदैव शिष्य को वर प्रदान करे। वरदाता है गुरुतत्व। गुरु महिमा में कहा गया है -

शिव रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन।
गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न संशयः।।

पर गुरु को रुष्ट होने का अधिकार तो ईश्वर ने छिन ही लिया है। तो पहली बात आप अपने हृदय की किताब पर लिख दो कि गुरु कभी नाराज हो सकते है। गुरु कभी नाराज नहीं होते। वे तो शिष्य को सदैव ऊंचा और ऊंचा देखना चाहते है। गुरु की यही भावना होती है कि शिष्य का कल्याण हो।

ज्ञानशक्ति समारुढ तत्वमाला विभूषिणे
भुक्तिमुक्ति प्रदात्रे च तस्मै श्री गुरुवै नमः

अब जो व्यक्तित्व अपने शिष्यों को भुक्ति और मुक्ति, भोग और स्वतंत्रता, दीनता से मुक्ति के मार्ग पर गतिशील करता है, वह तो कभी रूष्ट नहीं हो सकता। ज्ञान के माध्यम से निरन्तर शिष्य को उन्नति प्रदान कराते है।

आज गुरु पूर्णिमा है, कुछ बात खुलकर मैं करना चाहता हूं।

शिष्य बनने से पहले, साधक बनने से पहले आपका जीवन थोड़ा अलग था और शिष्य और साधक बनने के बाद जीवन थोड़ा अलग हो गया। क्या अन्तर पड़ा?

यह गंभीर प्रश्न आपसे स्पष्ट तौर से पूछ रहा हूं कि गुरु क्या बदलाव लाते है शिष्य के जीवन में?

आप विचार करो, लेकिन उससे पहले एक बात जान लो कि आपके जीवन में केवल दो ही बातें है।

पहली सबसे महत्वपूर्ण बात है आप स्वयं और दूसरी महत्वपूर्ण बात है आपका रचियता, आपका रचनाकार ईश्वर।

गुरु से मिलने से पहले आपको ज्ञात नहीं था कि ईश्वर से, शक्ति से कैसे सम्पर्क बनाया जाये? आपको अपने शारीरिक बल और मानसिक बल पर ही अभिमान था।

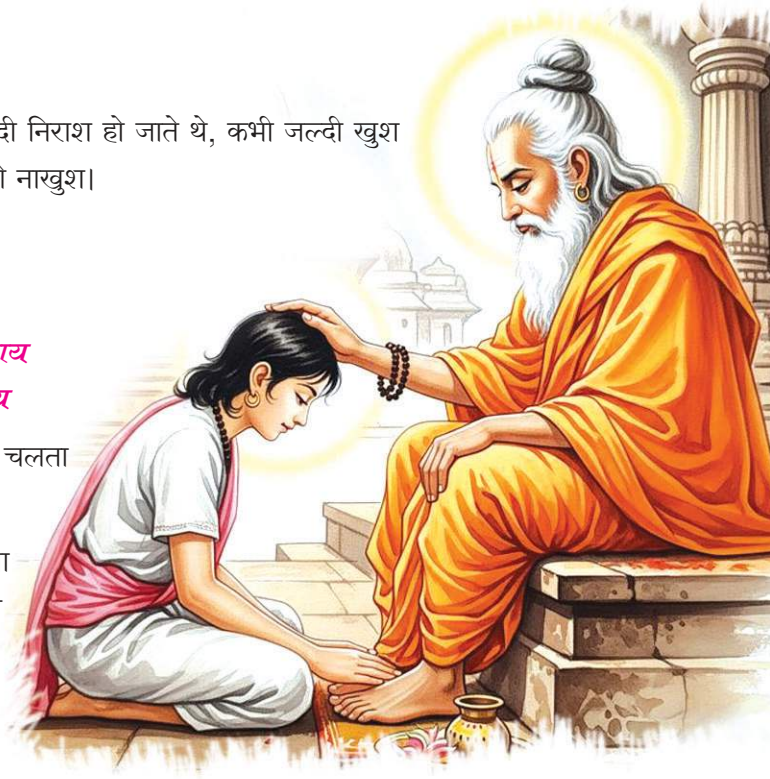

दैवीय शक्ति का सहयोग नहीं था, इसीलिये कभी जल्दी निराश हो जाते थे, कभी जल्दी खुश हो जाते थे। थोड़ा मिल गया तो खुश, थोड़ा चला गया तो नाखुश।

भीतर ही भीतर घुटते रहते थे।

भक्ति काल में संत कबीर ने कहा है कि -

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काकु लागे पाय
बलिहारी गुरु आपनो गोविन्द दियो बताय

गुरु आते है उसके बाद ही मनुष्य को ईश्वर का पता चलता है। ऐसा संत कह रहे है।

हो सकता है कई लोगों ने संत को भी कहा होगा कि ईश्वर तो सृष्टि के प्रारम्भ से है। गुरु की क्या आवश्यकता? बिना गुरु के भी हम ईश्वर का पता ढूंढ़ लेंगे?

देखों भाई! ईश्वर तो सृष्टि के प्रारम्भ से ही है। दैवीय शक्ति सृष्टि के प्रारम्भ से ही है लेकिन जब तक व्यक्ति शिष्य नहीं बनता है, उसके लिये दैवीय शक्ति का अनुभव, अनुभूति की संभावना बहुत कम होती है।

क्या कारण है?

चलो एक बात सुनों, बहुत साल पहले की बात है कि एक व्यक्ति से मिलने गया। अंधेरे में बैठा था, गर्मी का मौसम था, पसीने से बेहाल था। मैंने कहा, पंखा क्यों नही चलाते हो? बोला, सबकी लाईट गई हुई है, पंखा कैसे चलाऊं? मैंने बिजली के स्वीच को ऑन किया, लाईट चालू थी।

उसने कहा कि अरे! मैं तो इतनी देर बेकार ही उमस में बैठा रहा। मैं सोच रहा था सबके यहां लाईट नहीं है। सब अंधेरे में बैठे है, मैंने कहा लो अब प्रकाश और हवा आ गई।

अब आपको समझ में आया - गुरु आकर आपकी जिन्दगी में प्रकाश का स्वीच ऑन करते हैं।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया
चक्षुरन्मीलितं तस्मै श्री गुरुवे नमः

थोड़ा में बातचीत करने लगा, मैंने कहा तुमने एक बात पर ध्यान दिया क्या? हवा तो तुम्हारे चारों तरफ है लेकिन जब तक पंखा नहीं चलाया था, तब तक गर्मी में बैठे थे, हवा की अनुभूति नहीं हो रही थी।

मुझे मालूम था कि वह आदमी कि गुरु और ईश्वर में आस्था कम है इसीलिये मैंने बात को उस दिशा में मोड़ते हुए कहा कि -

प्रकाश और हवा की तरह गुरु और ईश्वर भी हमारे जीवन में हर समय उपस्थित है। लेकिन जब तक कोई शक्ति हमें अंधकार से प्रकाश की ओर नहीं ले जाती, तब तक हम ईश्वर की सत्ता का अनुभव नहीं करते है।

उस व्यक्ति ने फिर कहा - भाई साहब, न हवा दिखाई देती है, न ईश्वर दिखाई देता है।

मैंने कहा मैं तो यह समझता हूं कि ईश्वर हर समय उपस्थित है। मैंने कहा विचार करना - और चला आया।

थोड़े दिन बाद मुझे समाचार मिला कि इस बार तूफान आया तो उसके घर की छत के ऊपर लगी हुई टिन की चद्दर उड़ गई थी। फिर मैं पहुंचा उसके घर की भई बहुत बुरा हुआ। छत ही उड़ गई। मैंने कहा भयंकर तुफान तुम्हें सुनाई दिया क्या।

उसने कहा - कैसे बात करते हो आपको तूफान सुनाई भी दिया और दिखाई भी दिया। मैं शांत स्वर में कहा - ठीक इसी प्रकार ईश्वर भी सदैव दिखाई देते है, सुनाई देते है लेकिन इसकी अनुभूति केवल और केवल साधक शिष्य को होती है।

जो सामान्य व्यक्ति होते है वे इस अनुभव से वंचित रहते है। उन्हें ईश्वर की उपस्थिति केवल और केवल गंभीर घटनाओं में नजर आती है। जैसे तूफान, सुनामी, बाढ़, वर्षा, अतिवृष्टि इसीलिये इन घटनाओं को एक्ट ऑफ गॉड act of god कहा गया है।

ये भगवान के प्रकोप है, भगवान रुष्ट हो गये।

आप क्या कहते हो? जब बाढ़ वगैहरा आ जाती है, तूफान आ जाता है तो कहते हो ना यह कैसी ईश्वर की लीला है? तब आप मानते हो ईश्वर है। तो रोज ईश्वर नहीं है, ऐसा कैसे कह सकते हो?

सरल बात यह है कि नित्य प्रति शक्ति के रूप में, शुभ शक्ति के रूप में ईश्वर को एक शिष्य ही अनुभव कर सकता है और गुरु पूर्णिमा के दिन शिष्य अपनी इसी शक्ति का नवीनकरण कराने के लिये गुरु के पास आता है।

वह चाहता है कि ये ईश्वरीय अनुभूति, दैवीय शक्ति सदैव उसके भीतर जाग्रत रहे और वह अपने संसार के कर्मों को श्रेष्ठ रूप से सम्पादित कर सके।

आप सब चाहते हो कि आपमें शक्ति स्थापित हो जाये और प्राप्त करना चाहते हो अपने भौतिक जीवन में आनन्द। पर महत्वपूर्ण बात यह है कि भौतिक जीवन में परम आनन्द के लिये आध्यात्मिक शक्ति चाहिये और गुरु इस शक्ति का स्वरूप होते है।

भौतिक जीवन में आनन्द के लिये आध्यात्मिक शक्ति चाहिये ही चाहिये।

अब मैं दूसरी बात पूछता हूं - गुरु क्यों मिलते है शिष्य को?

अब तब आपने एक भ्रम पाल रखा है कि मैं शिष्य गुरु का चुनाव करता हूं।

आप नहीं करते हो, गुरु चुनते है शिष्य को। गुरु शिष्य के मिलते है उसे पूर्ण करने के लिये और इस विशेष क्रिया को चमत्कार को कैसे करते है।

पहली शर्त है - गुरु सुपात्र का चयन करते है।

सुपात्र शब्द में आया है पात्र। आप आप किसी पात्र को, बर्तन को नल के नीचे जल भरने के लिये रख दोगे और उस पात्र में छेद हुआ तो जल रुकेगा नहीं क्योंकि छिद्र उसे खाली कर देगा, अब आगे आपने छिद्र को बंद कर दिया और नल को भी बंद कर दिया तो भी जल नहीं भरेगा क्योंकि आपने जल के स्रोत को ही बंद कर दिया है। सरल उपाय है, छिद्र को बंद करो।

स्रोत को खोल दो जीवन का पात्र भर जायेगा।

जीवन उस पात्र की भांति है। सुपात्र और कुपात्र शब्द यही से आये है।

सुपात्र कौन? जिसने छिद्र को भर दिया है और स्रोत खोल दिया है वह उद्गम से भी लाभ ले रहा है।

कुपात्र वह पात्र है जिसे अपने जीवन क्या छेद है उसका मालूम नहीं। वह जानता ही नहीं कि उसके जीवन में कष्ट का कारण क्या है? वह कैसे शांति पायेगा? वह कैसे पूर्ण होगा?

सुपात्र के पास श्री की शक्ति है, संस्कार की शक्ति है। इसीलिये गुरु सबसे पहले संस्कार देते है। **'गुरु शक्ति स्थापना संस्कार'** का अर्थ है - **'अच्छे संस्कारों की स्थापना', जीवन के छिद्रों को भरना।**

गुरु जब आपके जीवन में आते है तो वे आपके जीवन की कमियों को भर देते है। विशेष बात क्या है? जीवन का यह स्वभाव है, वह स्वयं अपने आपको नवीन कर लेता है। कैसे करता है?

इसे कहते है - टाईम, समय, काल। समय के प्रवाह में जीवन अपने आपको निरन्तर नवीन करता रहता है।

शरीर को देखों हर रोज नई-नई कोशिकाओं का निर्माण हो रहा है और पुरानी कोशिकाएं समाप्त होती है।

अभी आपने पढ़ा होगा कि नैनीताल के जंगलों में आग लग गई। कुछ साल बाद आप देखोंगे कि वह वन फिर से नवीन हो गया है। वापिस नये वृक्ष उग गये, क्योंकि वन में सबकुछ अपने आप बढ़ता है।

ऐसे ही जीवन है, इसमें स्वयं को नवीन करने की शक्ति है।

स्वयं को नवीन करने की शक्ति को ही तंत्र कहते है। जिसने अपने स्वयं के तंत्र का विकास कर लिया वह बार-बार अपना नवीनकरण करता रहता है, अपने दोषों को हटाता रहता है।

आज हम उसी शक्ति का आह्वान कर रहे है, उसी कर्मशक्ति का जिसका स्वरूप श्रीकृष्ण है। उसी ज्ञान शक्ति का जिसका स्वरूप निखिल है। उसी शक्ति का जिसका नाम श्री है।

आप देखों कभी-कभी आपको चोट लग जाती है और वह चोट अपने आप खुद भर जाती है, ठीक हो जाती है।

आपको केवल एक काम करना है। उस चोट के बारे में भूल जाना है। यदि आप उस चोट को रोज-रोज खरोचोंगे तो क्या भरेगा? बिल्कुल नहीं भरेगा।

ऐसा कोई व्यक्ति हुआ है जिसके जीवन में कोई दुर्घटना घटित नहीं हुई हो, कोई धोखा नहीं मिला हो? मन में बहुत घाव लगा था उस समय लेकिन पन्द्रह साल तक उस छल को, कपट को ही याद रखोंगे तो व्यथित क्या होगा? आपका मन, आपका ह्रदय ही।

इसीलिये आज गुरु पूर्णिमा पर मन का भी नवीनीकरण करना है। यदि मन का नवीनीकरण नहीं किया तो हर समय पीड़ा रहेगी।

सुपात्र अपने जीवन को पूर्ण बनाने के लिये नवीनीकरण करने हेतु निरन्तर प्रयासरत रहता है।

आप यहां मुझे सुन रहे हो और जो दूर बैठे भी सुन रहे है वे सभी शिष्य सुपात्र है और आप सुपात्र को मैं यही वर देना चाहता हूं कि आप को अपने जीवन रस को भरा हुआ रखना है, कभी शुष्क नहीं होना है, रुखा-सूखा नहीं बनना है।

किस तरह से आप अपने जीवन रस को सिंचोगे। चार उपाय है और चारों साथ-साथ चलेंगे।

1. इच्छाशक्ति
2. आशा शक्ति
3. विद्या शक्ति
4. सुमति शक्ति

इसके बाद ही आप अपने जीवन में पूर्णता अनुभव करोगे और आपकी भाषा में कहूं तो आपको जीवन में आनन्द आने लगेगा।

पर आपकी पूर्णता में बाधक क्या है?

आपका शून्य से भय, खाली होने से भय। अंधेरे में भयवश रस्सी को सांप समझने लग जाते हो।

भयवश कई बार आपको छाया दिखाई देती है।

भयवश कई बार रात को बुरे सपनें आते है और बुरे सपनों को याद कर आप अपने भय को ओर मजबूत कर लेते हो।

सोचने के दो तरीके है। एक तरीका है – आज सबकुछ शुभ-शुभ होगा।

एक तरीका है आज तो कुछ अशुभ होगा।

अब आप सोचों कि आप किस दिशा में ज्यादा सोचते हो? ज्यादातर लोग थोड़ा सुख आते ही सोचते है अब तो कुछ अशुभ होगा। जबकि सद्गुरु निखिल से जुड़े शिष्य तो यही सोचते है कि आज शुभ है, अभी शुभ है और आगे भी शुभ ही शुभ होगा।

काम पर जाते हो तब भी यही सोचते हो? क्यों व्यर्थ का सोचते हो? इस सोच का मूल कारण है आपके मन का भय। देखों भाई, भय का नाश करने के लिये शून्यता को अपनाना पड़ेगा।

हमारा सौर मण्डल भी बिल्कुल शून्य की तरह है और इस विशाल शून्य में ही सबकुछ समाप्त हो जाता है। जब कुछ नहीं था, तब भी शून्य था और जब सबकुछ है तब भी शून्य है। शून्य का अर्थ खाली नहीं है, शून्य का अर्थ है पूर्णता।

आप खाली होने से डरते हो।

आज आपको स्पष्ट कह रहा हूं। भय का नाश करना है तो अपने स्वयं के तंत्र को मजबूत करना होगा। और यह मजबूती बैठे-बैठे नहीं आयेगी।

कृत्य अर्थात् कर्म करना पड़ेगा।

कृत्या भाव और कर्ता भाव एक ही है। जो कृत्य करता है उसे कर्त्ता कहते है और जो कर्त्ता है उसे ही तो जगत का कर्त्ता भगवान शिव शक्ति प्रदान करते हैं।

अपने कर्म की शक्ति कृत्या शक्ति को प्रबल बनाओं। हुंकार के साथ कार्य करो।

कृत्या अर्थात् हुंकार की शक्ति और हुंकार केवल मुंह से नहीं निकलता है, हृदय से निकलता है। हमने व्यर्थ के अहंकार को बहुत प्रेम से पकड़कर रखा है।

अभी बहुत कृत्य करने है, कर्म करने है। जब तक जीवन है तब तक कर्म करना है। क्या छोड़ना है? व्यर्थ का अहंकार।

अभी मैंने एक सुन्दर कथा पढ़ी थी, प्रतीक कथा है। एक राही ने पहाड़ी नदी को पूछा। अरे नदी! इतनी तेज गति से क्यों जा रही हो, इतनी क्या जल्दी है। नदी ने कहा मुझे सागर से मिलना है। बोला, सागर से मिल गई तो तुम्हारे पास क्या बचेगा?

नदी ने कहा किसको बचाना है, सागर से मिल जाऊंगी तो पूर्ण हो जाऊंगी। नदी कहती है, सच्चा शिष्य कहता है –

जब पहचान पिछले जन्म की होती है,
तो मन अनायास ही खिंचता चला जाता है
मेरा तो उद्भव भी तुम ही से हुआ है
और विलीन होना भी तुम्ही में है
मेरे सारे भाव समर्पित
मन के सब उद्भव समर्पित
सांस सांस है तुझे समर्पित
मैं पूर्ण रूप से तुम्हें समर्पित

पर कई मनुष्य है कि खाली होने से डरते है। शून्य के बिना पूर्णता नहीं मिल सकती।

गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु के पास क्यों आये हो? पूर्ण बनने के लिये आये हो ना। फिर खाली होने से क्यों डरते हो, शून्य होने से क्यों डरते हो?

कोई भी नई शुरुआत करने के लिये बदलाव आवश्यक है और बदलाव से आपको बड़ा डर लगता है।

समय परिवर्तनशाली है। शक्ति निरन्तर परिवर्तनशाली है।

समय के साथ, शक्ति से जुड़ जाओं और परिवर्तन को खुले ह्रदय से स्वीकार करो।

मेरे पास लोग आते है। बहुत धूमधाम से बेटा-बेटी की शादी करते है और फिर छः महिने बाद शिकायत भी करते है कि अब बेटा तो बदल गया है। उसका व्यवहार पहले जैसा नहीं रहा।

शांत दिमाग से सोचों कैसे रहेगा? उसके पास भी अब श्री की शक्ति आ गई है। इसलिये बदलाव स्वभाविक है। नहीं बदले तो तुम्हें चिन्ता होनी चाहिये?

जहां भी श्री, श्रीमान् या श्रीमति के रूप में श्री आयेगी वहां बदलाव होता है। आपकी बेटी के शादी के बाद भी उसके जीवन में श्री आये, श्रीमान् आये वह श्रीमति हो गई, तो परिवर्तन आयेगा।

आज गुरु पूर्णिमा पर स्पष्ट कह रहा हूं, जीवन का अर्थ परिवर्तन है और उससे ही जीवन में अर्थ आता है।

एक बात आप अपने जीवन में भी देखना, जब भी जीवन अर्थहीन लगे तो समझना, परिवर्तन आने वाला है, और नया अर्थ लायेगा।

बस आप अपनी शक्ति के साथ, गुरु शक्ति के साथ सदैव आशावान रहे।

गुरु पूर्णिमा है, स्पष्ट कह रहा हूं – निराशा को जीवन में स्थान नहीं देना है। आपकी उम्र कितनी ही बढ़ जाये,

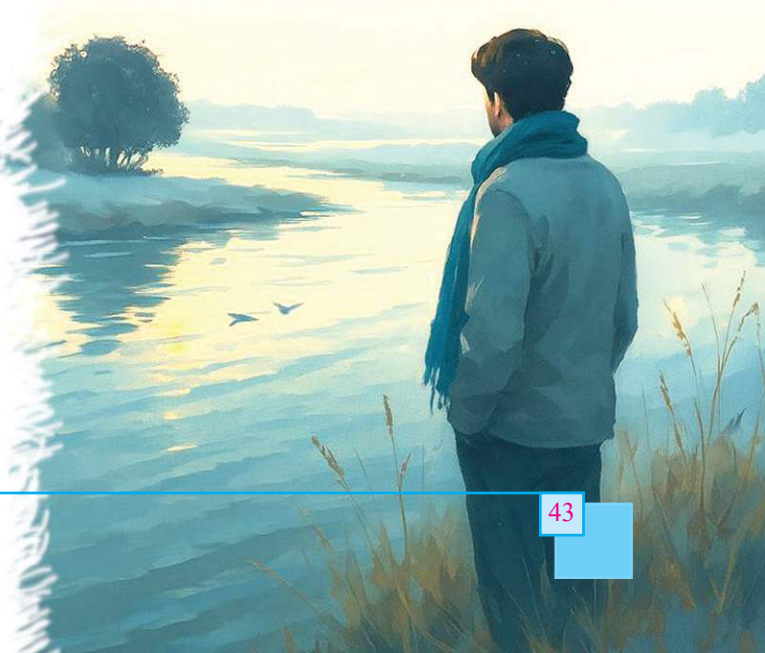

आशावान रहोगे तो आप जीवन्त हो और आपको केवल जीवित नहीं, जीवन्त रहना है।

एक कहानी याद आती है, पेड़ से पत्ते सूख जाते है तो पेड़ से टूट कर अलग हो जाते है। ऐसे ही एक पत्ता सूख कर पेड़ से अलग हो गया, गिर गया। बाकी हरे पत्ते उसका मजाक उड़ाने लगे। वह हरी भरी घास में गिर गया। घास ने भी उसका मजाक उड़ाया। अरे! इस हरियाली में तेरा क्या काम? बाकी पत्तों से, घास से तानें सुनकर सूखा पत्ता निराश हो गया। अब जीवन में रस ही नहीं रहा।

तभी एक घटना घटी, तेज हवा का झौंका आया और सूखा पत्ता उड़ कर पानी में जा गिरा। छोटा हौद था, अब उस हौद में एक चींटी गिर गई थी, वह अपनी जान बचाने के लिये भरसक प्रयास कर रही थी। गिरा हुआ पत्ता सामने आये, चीटीं चढ़ गई उस पर और धन्यवाद दिया कि आज आपके कारण मेरी जान बची।

सूखे पत्ते ने कहा कि – मैं तो आपको धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने मेरे जीवन का नया अर्थ दिया, अन्यथा बाकी हरे-भरे पते तो सब मेरा मजाक उड़ा रहे थे।

चीटीं ने कहा कि देखों! जोहरा भरा है वह भी कल सूख जायेगा और यह कहावत हजारों सालों से चली आ रही है कि –

डूबते को तिनके का सहारा...

हर चीज उपयोगी बन सकती है। हर जीवन उपयोगी हो सकता है। हमारा जीवन भी उपयोगी हो सकता है। यदि हम परिवर्तन को स्वीकार कर ले।

कोरोनाकाल में आपने डर कर परिवर्तन को स्वीकार किया, अब सब सामान्य है हंसी-खुशी से नये परिवर्तन को स्वीकार करों।

पर इस परिवर्तन की शक्ति को आत्मसात् करना सहज नहीं है क्योंकि जीवन के इस मार्ग में कहीं विश्राम नहीं है।

देखों भाई! जीवन है तो हर समय बदलेगा। बदलाव का नाम ही जीवन है और इसे आत्मसात् करने की क्षमता प्रकृति ने स्त्री स्वरूप में दिया है। आप अपने घर-परिवार को देखों, आपकी पत्नी अपना घर-बार सब छोड़कर आपके साथ आई। फिर भी उसे बार-बार सुनना पड़ता है कि इस घर में ऐसा नहीं होता, इस घर में ऐसा नहीं होता।

अरे भाई! इससे पहले घर कहा था? पत्नी आने के बाद ही तो गृहस्थ जीवन की शुरुआत होती है।

बिन घरनी घर भूत का डेरा...

शक्ति हमेशा स्त्री तत्व है और बल हमेशा पुरुष तत्व है।

इस बात को याद रखना – **शक्ति हमेशा स्त्री तत्व है और बल हमेशा पुरुष तत्व है।**

इसीलिये आप भी देवताओं से अधिक महाविद्या की साधना करते हो। दस महाविद्या की साधना करते हो।

यह मजाक वाली बात आपको भी मालूम होगी कि एक बार पति-पत्नी में युद्ध हो गया। जहां गृहस्थी है, वहां युद्ध चलता रहता है। लम्बी लड़ाई है और साथ भी रहना है। पुरुष ने कहा, मैं अधिक बलशाली हूं, स्त्री ने कहा मैं अधिक शक्तिशाली हूं। बहस हो गई, स्त्री ने कहा शादी हई तो क्या हुआ।। आप बारात लेकर आये थे हमारे यहां कितने लोग थे? फूफा, चाचा, मामा

सबको लेकर आये थे और मेरी हिम्मत, मेरी शक्ति देखों, मैं तो सबकुछ छोड़-छोड़कर तुम्हारे साथ आ गई हूं, निडर भाव से।

खैर, यह तो हंसी मजाक की बात हुई, यथार्थ जिन्दगी मे भी स्त्री शक्ति अपने आपको पुरुष से हीन समझती है। वास्तव में ऐसा है नहीं। मैंने कहा ना जिस पात्र में छिद्र होता है वह पात्र खाली हो जाता है।

शक्ति को गौरवान्तिव करें, सम्मान करें। जीवन महत्वपूर्ण हो जायेगा, आज अपने बल पर अभिमान न करें, अपनी शक्ति का विस्तार करें।

मेर पास भी जब आप पति-पत्नी सहित आते है तो मुझे अच्छा लगता है कि दोनों में सांमजस्य है, प्रेम है। दोनों के जीवन की आधार शक्ति गुरु है। तुम झूठ बोलकर मुझसे मिलने आये, पत्नी को बिना बतायें मुझसे मिलने आये मुझे अच्छा नहीं लगेगा।

तुम्हारे अन्दर इतना आत्मबल होना चाहिये कि गुरु के पास आओं तो घरवालों को पूरी जानकारी होनी चाहिये।

साधना करो तो छुपकर के मत करो। आपको किसी से डरने की आवश्यकता नहीं है। आप श्रेष्ठ कार्य कर रहे है।

अभी की ही घटना है, एक नवदम्पती मेरे पास आये, आपस में अनबन थी, बात सम्बन्ध विच्छेद तक पहुंच गई। लड़के के मां-बाप ने मेरे पास सुलह के लिये भेजा था। ध्यान देना, मां-बाप ने भेजा था। वो भी मेरे शिष्य थे।

मुझे गर्व है कि 45 साल में दो पीढ़ी बदल गई लेकिन 1990 से लेकर के 2024 तक 44 साल में पिता भी शिष्य, पुत्र भी शिष्य और पौत्र भी शिष्य।

यह है शिष्य परम्परा और यह है गुरु परम्परा।

खैर, दम्पत्ति की बात कर रहा था। दोनों बैठे थे, थोड़ी देर इधर-उधर की बात की। मैंने पूछा क्या बात है? बोला मेरी पत्नी बहुत नेगेटिव है, हर बात में खामी ढूंढती है, जबकि दूसरा पहलू भी होता है।

पत्नी से पूछा तो बोली पति मेरी समस्याओं को समझते ही नहीं है। मैं भी जॉब करती हूं, अध्यापिका हूं और इनको मेरे से बहुत अपेक्षा है। अब मेरी जूम पर क्लॉस चल रही है और बारिश आ जाये तो यह कहते है छत से कपड़े ले आओं। अब दोनों काम तो नहीं हो सकते है ना। इनके साथ कैसे निभेगी?

मुझे स्कूल से आकर भी बच्चों की कॉपी चैक करनी पड़ती है। सब कुछ बारीकी से देखना पड़ता है, क्लॉस टेस्ट के लिये पेपर तैयार करना होता है और साथ-साथ घर-गृहस्थी के काम भी।

मैं सुनता रहा चुपचाप, फिर कहा कि तुम कहते हो कि पत्नी बड़ी नेगेटिव है, चीजों को आधे स्वरूप में ही देखती है। यदि तुम्हें रोज सिर्फ भोजन में रोटी, सलाद और पानी दे दे तो तुम क्या कहोंगे? तुम यही कहोंगे ना कि खाना आधा अधूरा क्यों दिया? सब्जी कहां है? और सोचों, पत्नी कहे इतने नेगेटिव क्यों हो रहे हो, तुम्हारे पास जो चीजें है, परौसी है, उन्हें ही खा लो पेट भर जायेगा। तो तुम्हें कैसा लगेगा?

तुम्हारी पत्नी नेगेटिव नहीं है, वह पूर्णता पर फोकस करती है। जब उसका स्कूल का काम होता है तो वह पूरी तरह से स्कूल का काम करती है, घर का काम होता है तो पूरी तरह से घर का काम करती है क्योंकि शक्ति का स्वरूप ही पूर्णता है।

शक्ति का नाम पूर्णता है।

बात पति को समझ में आ गई कि भाई गृहस्थी की गाड़ी में दूसरे पक्ष के भी समझना चाहिये।

अब मैंने पत्नी को कहा देखों, तुम हर बात पर ध्यान दोगी तो कलह बढ़ती जायेगी। तुम हो शक्ति स्वरूपा।

शक्ति के पास तो हर कोई प्रार्थना लेकर आता है, आप भी इसीलिये शक्ति साधना करते है। अब आपकी किन प्रार्थनाओं को पूर्ण करना है और किन को पूर्ण नहीं करना है इसका भी निर्णय आप लोगे या शक्ति लेगी?

हमारे शिव भी शक्ति से रहित होकर शांत हो जाते है।

मैंने स्त्री को समझाया कि स्त्री अर्थात् श्री, श्री अर्थात् शुभमति और शुभ की आवश्यकता हर एक को होती है। हम कोई नया काम शुरु करते है तो घर के दरवाजें पर क्या लिखते है - शुभ-लाभ।

सिर्फ लाभ-लाभ नहीं लिखते।

जिस व्यापार के मूल में, जिस कार्य के मूल में शुभ नहीं है वह फलता-फूलता नहीं है। नौकरी हो, घर हो मूल है शुभ भाव।

आगे मैंने और पूछा, अनबन हो जाती है तो क्या हाथा-पाई करते हो, बोली नहीं। वैसे तो मेरा स्वभाव बहुत शांत है, मुझे अपना काम करना है और मैं जानती हूं कि लड़ाई-झगड़ा मन की शांति छिन लेता है। विवेक से निर्णय लेती हूं।

मैंने कहा देखों भाई, तुम हो श्रीमति, शुभमति, तुम्ही हर बात में परमिशन मांगोंगी तो किस की भूल है? क्यों ध्यान देती हो कि पति मुझमें कमियां निकालता है, यह भी तो सोचो कि आपको प्रेम भी तो करता है, घर की तिजोरी की चाबी भी आपको दे रखती है, आपको अपना काम करना है, दूसरे क्या कहते है इस पर इतना ज्यादा ध्यान मत दो।

यह बात मैं सबको कहता हूं। दूसरे क्या कहते है? इस पर ध्यान दिया तो तुम्हारा जीवन रुक जायेगा। इस बात को पूरी तरह से समझना।

मैंने कहा तुमने यह कहा कि पति तुम्हारे मन के अनुकूल आचरण नहीं करता है। पर कई सम्बन्ध ऐसे होते है जहां तुम्हारे मन के अनुकूल आचरण नहीं होता।

मैंने पूछा क्या तुम्हारा अधिकारी तुम्हारे मन के अनुकूल आचरण करता है।

आगे मेरी बात पर ध्यान देना, उसने कहा नहीं-नहीं। वहां प्रेम नहीं है वहां केवल सुविधा का सम्बन्ध है, नौकरी का ही सम्बन्ध है।

जिन से प्रेम किया जाता है, उनसे ही तो अपेक्षा रख सकते है।

मैं आपसे पूछता हूं कि क्या आपकी संतान आपके मनोनुकूल है? किसी की नहीं होती। तो क्या संतान को छोड़ सकते है?

दोनों ने कहा नहीं-नहीं मिडल पाथ निकालते है माता-पिता और संतान मिलकर। मैंने कहा देखों गृहस्थ जीवन में भी यही करना है। किसी भी सम्बन्ध को सफल बनाने के लिये थोड़ा हमें बदलना पड़ता है, थोड़ा उन्हें बदलना पड़ता है, बिना बदलाव किये सम्बन्ध दीर्घजीवी नहीं हो सकता।

आप भी सोचों आपके पांच वर्ष के बेटे

के साथ जैसा सम्बन्ध था, अब बेटा 25 साल का हो गया है तो क्या वैसा ही सम्बन्ध रहेगा। बहुत कुछ बदलेगा।

सम्बन्ध परिपक्व तभी होता है जब सम्बन्ध का रूप बदलता है।

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन यज्ञ में क्रिया के रूप में आहुति देता है और इन आहुतियों के द्वारा वह फल प्राप्ति की इच्छा रखता है।

मैंने जो बात कहीं उसको ध्यान से सुनना - जीवन एक यज्ञ है और क्रिया उस यज्ञ में दी गई आहुति।

फल प्राप्ति की सभी इच्छा रखते है और आप सब चाहते हो कि घर में, परिवार में, ऑफिस में, व्यापार में, रिश्तेनाते में सबसे सम्बन्ध मधुर रहे।

है कोई ऐसा चाहता है लड़ाई-झगड़ा रहे।

कोई नहीं चाहता है। हर कोई शुभ और लाभ चाहता है। पर एक बात है, कुछ लोग आपसे हमेशा नाराज रहेंगे। कहते है ना शादी में फूफा सबसे नाराज चलता है। उसको हर बात में कमी दिखाई देती है। भाई ऐसे व्यक्तित्व की आप परवाह मत करो।

आप अपने जीवन यज्ञ में श्री की अपेक्षा करते हो, सम्बन्ध शुभ रहे, ऐसी आशा भी रखते हो और फल की भी मांग करते हो। फल के आगे कुछ सोच ही नहीं पाते हो।

कोई-कोई होता है जो गुरु से श्री का आशीष मांगता है। जीवन में फल, श्रीफल चाहिये, श्रीरूपी फल चाहिये।

इसलिये हम स्तोत्र के अंत में फलश्रुति गाते है। देव प्रार्थना में अंत में घर, घोड़ा, गाड़ी, स्वास्थ्य, नौकरी इत्यादि का फल मांगा जाता है। जब यह स्तोत्र रचे गये तो पट्रोल की गाड़ी नहीं थी, अश्व संचालित रथ थे। धन का प्रतीक गौ धन था। लक्ष्मी सूक्त में शक्ति के विषय में कहा गया है कि

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने

प्रिय शिष्य! धन और श्री में, श्री ऊपर है जैसे शरीर का रथी मन है वैसे ही धन का रथी श्री है, श्री सर्वोच्च है।

वेदों में स्पष्ट कहा गया है कि जो व्यक्ति धन से सम्पन्न है वह महान् नहीं है, जो गुणों से सम्बन्ध है। वही व्यक्ति महान् शक्ति से सम्पन्न है।

गुरु पूर्णिमा है, गुरु से आप आशीर्वाद के आकांक्षी है, जीवन में धन आना चाहिये, लेकिन सदैव याद रखना मनुष्य की ख्याति धन से नहीं श्री से होती है।

धन तो कैसे भी आ सकता है, सही-गलत दोनों मार्गों से आता है लेकिन श्री हमेशा शुभ पथ को चुनता है और श्री के पथ पर चलने वाला व्यक्ति कभी अंहकारी नहीं होता, सदैव आभारी रहता है। हे ईश्वर मैं जीवन में शुभपथ पर चलूं।

यज्ञ करते है हम तो अंत में नारियल अर्थात् श्रीफल डालते है क्योंकि श्री परिवर्तन का सूचक है।

कुछ नया होगा, कुछ बदलाव होगा।

अब एक छोटी सी बात करना चाहता हूं। आप सबसे अधिक किस बात की चिन्ता करते है। धन की, स्वास्थ्य की, संतान की।

पहला सुख क्या है? पहला सुख निरोगी काया। दूजा सुख घर में माया अर्थात् लक्ष्मी और अब आज गुरु पूर्णिमा

है तो लक्ष्मी का अर्थ समझों श्री का वास है।

स्वास्थ्य की बात कर रहा हूं, निरोगी काया।

आज आपसे एक प्रश्न पूछता हूं...

क्या तुम स्वस्थ रहना चाहते हो, मैं तुम्हें महामृत्युंजय दीक्षा के साथ-साथ एक संकल्प भी चाहता हूं। तुम उस संकल्प को पूरा करो - इससे पहले एक बात सुनों -

एक बार, एक व्यक्ति ने कहा कि गुरु जी मुझे स्वस्थ रहने का कोई उपाय बताओं। मैंने कहा जरूर बताऐंगे। सदैव स्वस्थ रहना चाहते हो? मैंने कहा कितनी उम्र है? बोला 35 साल। पत्नी भी साथ थी, गुरु जी मुझे भी उपाय बताओं। उसकी उम्र होगी 32-33 साल। मैंने पूछा, बच्चे हो गये, खुशी-खुशी बोली दो है - एक लड़का-एक लड़की। मैंने कहा एक ही उपाय है, आज जो तुम लोगों ने सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहन रखें है, यदि यही वस्त्र 55 साल की उम्र में भी आप पहन सको तो आप स्वस्थ हो। हर साल पेट का घेरा बढ़ता जाये, कमर का घेरा बढ़ता जाये, गर्दन मोटी होती जाये और हर साल महंगे-महंगे नये-नये कपड़े सिलवाने पड़े तो समझ जाना आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

35 साल में जितना वजन है, 70 साल तक उतना ही वजन कायम रखना। 2-4 किलो कम हो जाये तो बहुत अच्छी बात है, जो कपड़े अभी पहनने लायक है, उसी फिटिंग के कपड़े 60 साल में भी काम आने चाहिये।

व्यर्थ का कपड़ों का भी खर्च बचेगा, लक्ष्मी भी व्यर्थ की कपड़ों पर व्यय नहीं होगी और स्वस्थ भी रहोगे। यही सबसे बड़ी आरोग्य दीक्षा है।

जीवन आपका है, आप विचार कर लेना।

अब बताओं, स्वास्थ्य के प्रति आपका ऐसा रुझान रहना चाहिये या नहीं रहना चाहिये।

एक बार एक भक्त के सपने में भगवान आएं। उन्होंने पूछा कि भक्त तुम जो दिन रात पूजा-पाठ करते थे, उसका फल तो तुम्हें मिल गया। धन है, सत्ता है, संतान है अब और क्या चाहते हो?

भक्त ने भगवान से कहा कि धन तो है, लेकिन मैं चाहता हूं कि मेरी बुद्धि हमेशा धन के सदुपयोग में लगी रहे।

धन का अभिमान नहीं हो मुझे, बल्कि धन को मैं श्रीपथ, श्रेय पथ पर ले जाऊं, संतान सन्मार्ग का चयन करें तथा धन का उपयोग जीवन को शुभ के रास्ते पर ले जाने के लिए करूं।

भगवान प्रसन्न होकर बोले तुम फल नहीं बल्कि श्रीफल चाहते हो।

श्री की आवश्यकता हर पथ पर पड़ती है तथा जो भी मुझसे श्री हेतु प्रार्थना करेगा, मैंने उसे श्री का आशीष देने का संकल्प लिया है।

हमारे जीवन में श्री अर्थात् नेक भावना, गुण, अच्छाई, परोपकार यह क्रम निरन्तर चलते रहना चाहिये।

जीवन यज्ञ में हमें श्री की प्राप्ति हो

देवता और राक्षस में क्या अन्तर है। राक्षस वह है जो परोपकार का प्रति उत्तर नहीं देता

है। सिर्फ स्वयं का ही भला चाहता है।

मनुष्य वह है जो परोपकार का उतना ही प्रति उत्तर देता है जितना आवश्यक है। इसे आपकी भाषा में कहते है हिसाब बराबर करना कहते है।

तुने मेरे लिये इतना किया, मैं तेरे लिये इतना कर देता है।

देवता वे है जो सदैव परोपकार की मशाल जलाये रखते है।

आपने देखा होगा कि - जब ऑलम्पिक शुरु होता है तो सूर्य की किरणों से एक मशाल जलाई जाती है और आगे एक के बाद एक दूसरे को मशाल थमाते है।

आप सभी पूर्ण होना चाहते है। इसके लिये साथ-साथ चलना पड़ता है। यह मार्ग आसान नहीं है।

सबके साथ-साथ चलते हो तो सबसे धीरे चलने वाले की स्पीड़ पूरे ग्रुप की स्पीड़ बन जाता है।

वैष्णों देवी की चढ़ाई में देखा होगा। यदि कोई धीमे चल रहा है तो पूरे ग्रुप की स्पीड़ धीरे हो जाती है। इस गति को तेज करना है, कोई धीरे नहीं रहे, सब उन्नति करे।

धीरे वाले को तेज चलाना है, सहयोग कर।

इसलिये गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर शिष्य गुरु से मिलने आता है, पूर्ण बनने के लिये शक्ति युक्त बनने के लिये।

गुरु पूर्णिमा पर आपके लिये भी मेरा संदेश है - पूर्णता से युक्त होकर पूरा निखिल मंत्र विज्ञान परिवार एक साथ चलेगा तो यह क्रांति होगी, सामाजिक क्रांति होगी, आर्थिक बदलाव होगा।

आप चिन्ता मत करो, चिन्तन करो। गुरु शिष्य की हर कमी को, हर लेते है।

यो गुरुः स शिवः प्रोक्तो यः शिवः स गुरुः स्मृतः।

गुरु की शक्ति शिष्य को सिंचती है और गुरु का कार्य है शिष्य को पूर्ण करना इसलिये गृरु मातृ स्वरूप है और भाव भरी प्रार्थना है -

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

- परम पूज्य गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

(श्रीविद्या सायुज्य जगद्गुरु श्रीकृष्ण तत्व
गुरु पूर्णिमा महोत्सव - 2024)